रजःकणैः खुरोद्धूतैः स्पृशद्भिर्गात्रमन्तिकात् ।

तीर्थाभिषेकजां शुद्धिमादधाना महीक्षितः ।।85।।

अन्वय खुरोद्धूतैः अन्तिकात् गात्रं स्पृशद्भिः रजः कणैः महीक्षितः तीर्थाभिषेकजां शुद्धिम् आदधाना (सती वनादाववृते)।

अनुवाद अपने खुरों से उड़ाए गए समीप होने के कारण (राजा दिलीप के) अंगों के स्पर्श करते हुए धूल के कणों से पृथ्वी के स्वामी दिलीप की तीर्थ जल में स्नान करने से उत्पन्न होने वाली शुद्धि (पवित्रता) को करती हुई नन्दिनी गौ (वन से लौटी)।

टिप्पणियाँ

(अन्तकात् गात्रं) स्पृशद्भिः धातु स्पृश् शतृ, तृतीया विभक्ति, बहुवचन, पास से (राजा के) अंगों को छूते हुए। 'रजः कणैः' का विशेषण।

खुरोद्धूतैः खुरेण उद्धूतैः (उद् धातु धू क्त), खुरों से उड़ाए हुए। 'रजः कणैः' (धूल के कण) का विशेषण।

आदधाना आ धातु धा शानच् टाप् (स्त्रीलिंग) करती हुई, बनाती हुई। नन्दिनी का विशेषण।

महीक्षितः राजा की अर्थात् राजा को अपने खुरों की धूल से शुद्ध बनाती हुई। पवित्र करती हुई।

तीर्थाः तीर्थेषु अभिषेकः सप्तमी (तत्पुरुष), तीर्थाभिषेकेण जातमिति तीर्थाभिषेकजातम्, तृतीया तत्पुरुष। तीर्थ अभिषेक धातु जन् ड् टाप्, द्वितीया एकवचन, तीर्थस्थान, विशेष

रूप से पवित्र नदी तट पर स्थित धार्मिक स्नान। भाव यह है कि जिस प्रकार पवित्र गंगा आदि नदी के तट पर विराजमान 'हरिद्वार', 'काशी' आदि तीर्थस्थानों में स्नान करने से शरीर शुद्ध होता है उसी प्रकार नन्दिनी गौ भी अपने खुरों से उड़ाई गई धूलि से राजा के शरीर को शुद्ध कर रही थी। इससे नन्दिनी गौ की दिव्यता व्यक्त होती है कि गंगा आदि पवित्र नदियों के समान उसकी खुरों से उठी धूलि पावनता लिये हुई थी। यहां उस धूलि में शुचित्व पावनत्वादि गुणों का आधान है।